“ड्रामा इन एजुकेशन”

4 दिवसीय कार्यशाला, देहरादून (उत्तराखंड)

“रंगमंच एक शक्तिशाली लेकिन शिक्षा में सबसे कम उपयोग में लाया गया कला का रूप है | दूसरों के संबंध में स्व की खोज, स्व की समझ का विकास, आलोचनात्मक सहानुभूति केवल मनुष्यों में ही नहीं बल्कि प्राकृतिक, भौतिक एवं सामाजिक विश्व में भी सर्वश्रेष्ठ माध्यम है | पाठ का नाटकीकरण करना रंगमंच का एक लघु भाग है | इससे अधिक सार्थक अनुभव, भूमिका निर्वाह, रंगमंच अभ्यासों,शरीर और स्वर की गति एवं नियंत्रण सामूहिक एवं सहज प्रदर्शन द्वारा सम्भव हो सकते हैं | यह अनुभव शिक्षकों के स्वयं के विकास के लिए तो महत्वपूर्ण है ही साथ ही बच्चों के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं ”

(शिक्षा में रंगमंच – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005)

सुगम कर्ता : मोअज्जम अली , अज़ीम प्रेमजी जिला संस्थान,उधम सिंह नगर

प्रमोद पैन्यूली , अज़ीम प्रेमजी जिला संस्थान, उत्तरकाशी

संजय सेमवाल . अज़ीम प्रेमजी जिला संस्थान, टेहरी

दस्तावेजीकरण : विकास बर्त्वाल , अज़ीम प्रेमजी जिला संस्थान, टेहरी

पहला दिन- 25 जून 2016 (शनिवार)

सत्र 1 – Context setting

कार्यशाला की शुरुआत करते हुए ए.पी.एफ़. के सदस्य ने शिक्षक साथियों के साथ "तलवार और ढाल" गतिविधि से करी, जहाँ सदस्यों की एक ऊँगली उनकी तलवार और पीठ के पीछे दुसरे हाथ की हथेली उनकी ढाल का काम करेगी |

साथियों को एक दुसरे की ढाल पर वार करना है और साथ ही खुद को दुसरों के हमलों से बचाना भी है | गतिविधि के बाद सन्दर्भदाता ने शिक्षक साथियों को संबोधित करते हुए कहा कि "बेहतर समाज की अवधारणा के लिए बेहतर नागरिक और बेहतर नागरिक बनने के लिए बेहतर शिक्षा उपलब्ध करना राष्ट्र,राज्य और सरकारों का दायित्व है|अच्छी शिक्षा के लिए जरुरी है कि शिक्षकों को भी लगातार शिक्षा में होने वाले नवचारों व नयी तकनिकीयों के बारे में जानकारी मिलती रहे , जिसके लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था में नियमित शिक्षक क्षमता संवर्धन व्यवस्था की गयी है| जिले के स्तर पर डायट साथ ही साथ संकुल और विकासखंड स्तर पर संसाधन केन्द्रों की स्थापना की गयी जिसका मुख्य उदेश्य ही शिक्षक क्षमता संवर्धन है | अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन भी शिक्षक क्षमता संवर्धन के लिए विभिन्न तरीकों से काम कर रहा है | जिसमे इस तरह की कार्यशालाएं ,संगोष्ठी,बैठकें, चर्चा –परिचर्चा आदि शामिल हैं जिसका मुख्य उदेश्य मिलजुल कर सीखना है लेकिन इसके लिए स्वैच्छिकता का भाव बहुत जरुरी है |

अगले चार दिनों तक होने वाली इस कार्यशाला का विषय ड्रामा इन एजुकेशन है जो कि भारतीय परिपेक्ष्य में एक नया विषय है और इसका उपयोग बहुत ही सीमित स्तर पर किया जा रहा है !

विद्यालयों में कला को तीन नजरियों से देखा जाता है

1. **एक विषय के रूप में**
2. **अन्य विषयों को सीखाने के माध्यम के रूप में**
3. **जीवन कौशल विकसित करने के अवसर के रूप में**

इसके बाद सभी उपस्थित प्रतिभागियों को अपना अपना एक साथी चुनने को कहा गया जिसके जीवन और व्यक्तिव के बारे में जानकारी लेने के बाद सभी को अपने साथी का परिचय सदन को देना था , इस तरह से सभी शिक्षक साथियों का परिचय और उनके व्यक्तित्व के बारे में कुछ जानकारियां भी साझा हो गयी |

इसके बाद सन्दर्भदाता ने शिक्षक साथियों से इस कार्यशाला को लेकर उनकी अपेक्षा पूछी तो कुछ इस तरह की बाते सामने आयीं,

1- ड्रामा का इस्तेमाल बच्चों के नजदीक जाने का एक अवसर देगा साथ ही साथ उनसे दोस्ताना व्यवहार बनेगा |

2-सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहयोग मिलेगी |

3- कक्षा कक्ष में रोचक माहौल बनेगा, जिससे बच्चों को सीखने में मदद मिलेगी |

4-कार्यशाला के अनुभव संकुल में अन्य शिक्षक साथियों के साथ साझा करके ज्यादा साथियों तक इस प्रयोग को पहुँचाने का प्रयास |

5-कक्षा में अन्य विषयों को रुचिकर बनाने के लिए कार्यशाला में कुछ सीखने को मिलेगा |

6-कार्यशाला की गतिविधियाँ TLM का काम करेंगी |

टिहरी की शिक्षक साथी श्रीमती तेजोमहि बधानी ने अपनी बात रखते हुए कहा कि "यहाँ सभी रंगमंच के कलाकार से ही हैं, इस कार्यशाला से कुछ नया सीखने को मिलेगा जिसका फ़ायदा निश्चित तौर पर बच्चों को मिलेगा |"

चमोली के शिक्षक साथी मैखुरी जी ने कहा "कार्यशाला से मिले अनुभव ऊर्जा देंगे जिसे कि हमको बच्चों तक प्रवाहित करना है जिससे उनको सीखने में मदद मिलेगी |"

पौड़ी गढ़वाल के शिक्षक साथी कमलेश जोशी जी ने अपनी बात रखते हुए कहाकि "यह एक नया तरह का प्रशिक्षण है, सीखना एक सतत प्रक्रिया है जोकि बच्चों की कौशल क्षमताओं के विकास के लिए मददगार साबित होगा | नेता और शिक्षक को तो ड्रामेबाज़ होना ही चाहिए क्यूंकि उनको सबतक अपनी बात पहुंचानी होती है |"

इसके बाद चर्चा को आगे बढाने के लिए सदन से प्रश्न किया गया कि शिक्षा में नाटक/ड्रामा क्या है | जिसके जवाब सदन से कुछ इस तरह से आये,

- विचारों की अभिव्यक्ति
- आपके चेहरे के भावों से जो अभिव्यक्त हो
- जिए हुए अनुभवों को दर्शाना
- अनुभवों को कला में जीना
- बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए जो कुछ भी रचनात्मक गतिविधि हो
- गीत कविता को हावभाव के माध्यम से व्यक्त करना

सन्दर्भदाता ने कहा कि इंसानी अनुभवों को समझना,उनसे जुड़ाव और अन्य संवेदनाओं को समझना ड्रामा का सबसे अहम् हिस्सा है !

Performance

 # Doing Drama → Performance / Art Piece

(नाटक करना)

Art Piece

 # Using Drama

(नाटक इस्तमाल करना)

इसके बाद सदन को 5 समूहों में बाँटा गया और 5 मिनट में उनसे किसी कहानी पर नाटक करने को कहा गया, जिसके बाद सभी समूहों ने ये 5 नाटक किये | विद्यालयी अनुभवो के अनुसार सभी साथियों ने अपने अपने नाटकों का बड़े अच्छे से प्रदर्शन किया |

1- हल्कू हाथी
2- सब्जियों का राजा
3- प्रदूषण राजा
4- ड्रामा इन एजुकेशन – कार्यशाला
5- बकरी और संगीतज्ञ की कहानी

सत्र 2- कला: एक विषय एक माध्यम

इसके बाद अगला सत्र कला विषय पर था | सत्र की शुरुआत कला क्या है और कला की परिभाषा क्या है जैसे प्रश्नों के साथ हुई | जिसके जवाब में सभी प्रतिभागियों से कला की परिभाषा जानने की कोशिश की गयी तो बहुत से बातें सामने आयीं, सभी शिक्षक साथियों ने अपने अपने विचार सदन में रखे जोकि कुछ प्रकार थे,

- मानवीय भावनाओं को अपनी रुचिकर विधा में अभिव्यक्त करना
- कल्पनाओं का साकार रूप
- सुखद अनुभूति/ अनुभव
- किसी कार्य को खूबसूरती/ बेहतर तरीके से करने का तरीका
- जीवन जीने की शैली
- अपनी भावनाओं को अच्छे तरीके से जीवन में उतारना

- मन में उठने वाले भाव विचार या देखी गयी वस्तु को बताना
- कार्य को आकर्षक बनाना
- सीखने सीखाने की प्रक्रिया
- किसी कार्य को रचनात्मक रूप से व्यक्त करना
- सृजनात्मकता का वैज्ञानिक अध्ययन

सभी परिभाषाओं को जोड़कर जो एक परिभाषा बनती दिखी वो कुछ इस तरह से थी "मानवीय भावनाओं,कल्पनाओं को अपनी रुचिकर विधा में सृजनात्मक,रचनात्मक और खुबसूरत तरीके से अभिव्यक्त करना कला है जो हमको सुखद अनुभूति देती है !"

सदन में आई किसी भी परिभाषा को ना बांधा गया ना ही किसी परिभाषा को ख़ारिज किया गया सभी में खुलापन रखा गया है ताकि उसमें कुछ भी नया आयाम जोड़ा जा सके हालाँकि कला की अपनी कोई स्थापित परिभाषा नहीं है समय, स्थान और दृष्टिकोण के साथ साथ परिभाषा बदलती रहती है |

ज्यादातर कलाकार यह मानेंगे कि कला को परिभाषित करना उचित नहीं हैं | कला को परिभाषित करना उसे सीमित करना होगा जो किसी कलाकार को स्वीकार्य नहीं होगा I दूसरी बात यह है कि हर इंसान कला की कुछ तो समझ रखता है और अपने जीवन में आजमाता है | इस कारण कला का तात्पर्य हर इंसान ,हर समाज व समय के लिए अलग होगा |

पहले दिन के आखिरी सत्र में सदन को 4 समूहों में बाँटा गया और कला की 4 अलग-अलग विधाओं में कुछ करके प्रस्तुत करने को कहा गया, जिसका प्रदर्शन अगले दिन के प्रथम सत्र में करना होगा I

पहला समूह – सहादत हसन मंटो की कहानी पर चित्र बनाना

दूसरा समूह – चिड़िया रानी कविता को नयी धुन में प्रस्तुत करना

तीसरा समूह – 3 दी गयी वस्तुओं पर नाटक प्रस्तुत करना जिसमें उनकी अहम् भूमिका हो

चौथा समूह – दिए गए चित्र पर कहानी बनाना और उसका मंचन

दूसरा दिन – 26 जून 2016(रविवार)

दुसरे दिन की शुरुआत भी गतिविधि के साथ हुई जिससे नए उत्साह और ऊर्जा से भरे हुए शिक्षक साथियों ने पिछले दिन के दिए काम को प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया |

पहला समूह- सहादत हसन मंटो की कहानी पर चित्र बनाना

पहले समूह ने सहादत हसन मंटो की कहानी "खोल दो" पर एक चित्र बनाया जो किसी एक व्यक्ति ने नहीं बल्कि पुरे समूह ने केवल अपनी उँगलियों से रंगों का उपयोग करके बनाया था | सबसे पहले सदन से पूछा गया कि उनको चित्र देखकर क्या महसूस होता है | सदन से जो प्रतिक्रियाएं आयीं उसके अनुसार ये केदारनाथ आपदा, किसी दंगें, रेल दुर्घटना, गाड़ियों से होने वाले प्रदुषण या फिर किसी पहाड़ी शहर में आपदा का चित्र है | इसके पश्चात समूह ने चित्र की प्रस्तुति करते हुए बताया कि कैसे पहले उन्होंने समूह में इस कहानी को कई बार पढकर और फिर अपने अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए उसका चित्रण किया | साथियों ने कहानी से चित्रण तक के सफ़र का विस्तृत विवरण सदन को दिया |

दूसरा समूह – चिड़िया रानी कविता को नयी धुन में प्रस्तुत करना

दूसरे समूह ने "चिड़िया रानी चिड़िया रानी, आओ बैठो सुनो कहानी" कविता का एक नयी धुन में मंचन करके दिखाया, जिसमें श्रीमति कान्ति अध्यापिका और अन्य साथी छात्रों के रूप में थे और बहुत ही नए और सुन्दर

तरीके से इस कविता को उन्होंने प्रस्तुत किया | प्रस्तुति के बाद सदन ने हालंकि इस प्रस्तुति की सराहना की मगर साथ ही साथ इस प्रस्तुति की आलोचना करते हुए यह भी कहाकि यह एक सामूहिक प्रयास ना होकर एक अकेले व्यक्ति का प्रयास लगता है जिसमें अन्य साथी बस साथ भर दे रहे हैं | किसी भी सामूहिक कार्य में सभी सदस्यों का शामिल होना जरुरी है, इस तरह के एकाकी प्रयास बच्चों के साथ नाइंसाफी करते हैं |

तीसरा समूह - दी गयी वस्तुओं पर नाटक प्रस्तुत करना जिसमें उनकी अहम् भूमिका हो

समूह तीन को 3 वस्तुएं स्कूटर की चाबी,पेन और पानी की एक बोतल दी गयी थी, जिसके इर्दगिर्द उनको नाटक बनाना और प्रस्तुत करना था साथ ही उस नाटक में इन तीनों वस्तुओं की अहम् भूमिका होनी चाहिए थी | समूह द्वारा प्रस्तुत किये गए नाटक में यह तीनों वस्तुएं ईस्तेमाल की गयी और एक बेहतरीन प्रस्तुति दी गयी |

चौथा समूह – दिए गए चित्र पर कहानी बनाना और उसका मंचन

चौथे समूह को दिए गए चित्र पर कहानी लिखनी थी और उसका मंचन भी करना था | चित्र में 2 औरतें और 2 बच्चियां किसी गाँव के खेत के आगे से गुज़र रहे थे | समूह ने इस चित्र को देख कर उत्तराखंड में पलायन और औधौगिक घरानों द्वारा प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर भूमि को खरीदने की स्थिति पर बनायीं गयी कहानी का मंचन किया | साथ ही समूह ने एक कहानी और बनायीं थी जोकि बच्चों के नज़रिए से बनी थी, जिसमे थोडा जादू, थोडा तिलिस्म और मासूमियत थी | ऐसा लगा कि मासूम कहानी पर आक्रोश और विद्रोह की कहानी भारी पड़ गयी | समूह 4 की प्रस्तुति पर शिक्षक साथी कमलेश जोशी जी का कहना था कि कहानियों में मासूमियत और कल्पनाओं का पक्ष रहना चाहिए, सबकुछ इतना यथार्त भी नहीं होना चाहिए कि बच्चों को मज़ा ही ना आये और बच्चे मासूमियत और कल्पनाओं से परे हो जाएँ | इस तरह की कहानियों में यथार्त और कल्पनाओं को बराबरी का स्थान देना चाहिए |

सत्र 3 :ड्रामा इन एजुकेशन का इतिहास

इसके बाद सन्दर्भदाता ने ड्रामा इन एजुकेशन की अवधारणा के उदय पर बातचीत करते हुए ड्रामा के इतिहास और उसके उदय पर बातचीत करी | उन्होंने बताया की कैसे पुराने समय की गुफाओं में आखेट और अन्य चित्र आज भी देखने को मिलते हैं जोकि उस वक़्त के रंगमंच के चित्र हो सकते हैं |उसके बाद के इतिहास अनुसार ग्रीक में रंगमंच स्थापित हुआ जहाँ इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक अनुष्ठान को सहयोग करना था | पोप की सत्ता पर सामाजिक जागरूकता के लिए नाटकों का प्रयोग किया गया जहाँ पोप की निरंकुशता के खिलाफ़ लोगो को एकजुट करने के लिए नाटकों का मंचन किया गया |1900 के आसपास कुलीन वर्ग की महिलाओं का रंगमंच में विशेष योगदान बताया जाता है जोकि संशय का प्रश्न भी खड़ा करता है, क्यूंकि कुलीन वर्ग में नाटको में काम करने को अच्छा नहीं समझा जाता था | शायद यह हो सकता है कि समय बिताने और मनोरंजन के लिए ये महिलायें अपने ही घरों,महलों में ये नाटक मंचित करतीं हों | 19वीं सदी के प्रारम्भ में ओधौगिक क्रांति के साथ साथ रंगमंच में बदलाव आना शुरू हुआ जब मजदूरों के अधिकार/हक की बात करी गयी, साथ ही साथ शिक्षा की बात भी की गयी |

दुसरे विश्व युद्ध के दौरान बार्तोलत ब्रेख्त ने हिटलर और सत्ता के खिलाफ और सामाजिक बदलाव का रंगमंच किया जोकि द्वंदात्मक रंगमच भी कहलाया | इसी तरह ब्राजील में पार्वोल और अगस्तो बोल का रंगमंच सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तन का रंगमंच था जोकि Theatre of the Oppressed " उत्पिडीतों का रंगमंच" कहलाया |

इंग्लैंड की डोरोथी हेथ्कोट को ड्रामा इन एजुकेशन अवधारणा की प्रणेता भी कहा जाता है, उन्होंने कक्षा कक्ष में नाटक का उपयोग एक माध्यम के तौर पर किया, उनका मानना था कि "बच्चों के जीवन में नाटक उनके मन के आन्तरिक अनुभवों का बाहरी जगत से सघन और निजी सम्बंध स्थापित करने का प्राथमिक माध्यम है |

भारतीय परिपेक्ष्य में देखा जाए तो भारत में रंगमंच का लिखित इतिहास बहुत ज्यादा पुराना नहीं है जबकि ऋग्वेद के सूत्रों में कुछ संवाद हैं। इन संवादों में लोग नाटक के विकास का चिह्न पाते हैं। अनुमान किया जाता है कि इन्हीं संवादों से प्रेरणा ग्रहण कर लागों ने नाटक की रचना की और नाट्यकला का विकास हुआ। यथासमय भरतमुनि ने उसे शास्त्रीय रूप दिया। रामलीला का मंचन मनोरंजन का सबसे पुराना साधन रहा और अंग्रेजों के समय में उनके सिपाहियों के मनोरंजन के लिए इन रामलीलाओं का मंचन किया गया जो धीरे धीरे समाज में बहुत प्रसिद्ध होता गया और आज तक इनका मंचन किया जाता है | भारतीय रंगमंच में पारसियों का भी बड़ा योगदान रहा है

इस विषय पर बात करते हुए शिक्षक साथियों ने रंगमंच पर अपने विचार रखे, कमलेश जोशी जी ने कहा कि कुलीन घरों की महिलाओं का रंगमंच में काम करना एक संशय का विषय लगता है हाँ ये कहा जा सकता है कि कुलीन घर के लोगों के मनोरंजन के लिए रंगमंच का उपयोग किया गया | वही देवप्रयाग के शिक्षक साथी विजय सिंग रावत जी ने कहा कि किस तरह पोप की निरंकुश सत्ता से तंग आकर इंग्लैंड में दुसरे देशों के साहित्य का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को बढाया गया | बहुत से साहित्य का अनुवाद कर उनका मंचन किया गया जिससे ये सन्देश आम जनता तक पहुँचाया जा सके | सुनील मैखुरी जी ने कहा कि आज भी विद्यालयों में ड्रामा का इस्तमाल नाम मात्र का होता है वो भी सिर्फ गिने चुने निजी विद्यालयों में, सरकारी विद्यालयों तो इनसे अभी बहुत दूर हैं और अगर कहीं इस तरह का प्रयोग होगा भी तो वो शिक्षक साथियों के निजी प्रयास होंगे |

सत्र 4- भूले बिसरे बचपन के खेल

अब कुछ खेलने का समय था सारे सदन ने बचपन के दिनों को याद करते हुए "पोसम्पा भाई पोसम्पा, डाकुओं ने क्या किया" और "घोड़ा जमाल शाही, आग पीछे जिसने देखा मार खायी" जैसे बेहद पुराने खेल खेले | उसके बाद

इस सत्र में खेल और खेलों से समृद्ध बच्चों के जीवन के बारे में बात हुई, सदन को ४ समूहों में बाँटा गया जहाँ उनको अपने बचपन में खेले गए खेलों की एक सूची बनानी थी, साथ ही उन खेलों से होने वाले लाभों के बारे में समूह से बात करके सदन के सामने प्रस्तुत करना था |

कुल मिलाकर लगभग 70 से ज्यादा कुल खेल सामने आयें, जिसमे से औसतन सभी समूहों ने 50 से ज्यादा ऐसे खेलों के नाम लिखे जो आज शायद लुप्तप्राय हो गए हैं, बहुत कम ऐसे खेल हैं जो आजकल के बच्चे खेलते हुए पाए जाते हैं |

खेलों के फायदे :- समूहों से बातचीत के बाद खेलों के जो फायदे फायदे सामने आये वो कुछ इस तरह से थे

1- शारीरिक विकास

2-मानसिक विकास

3- तार्किक विकास

4- नेतृत्व भावना का विकास

5- समय की महत्ता की समझ

6- सामूहिक कार्य प्रेरणा

7- क्रियाशीलता
8- त्वरित निर्णय लेने की क्षमता
9- सृजनशीलता का विकास
10- मनोरंजन
11- सजगता और एकाग्रता
12- गणितीय विकास
13- अनुमान क्षमता का विकास
14- भाषाई कौशल का विकास
जो 70 खेल सदन से आये उसमे से 4 खेलों को सुगमकर्ता ने अलग से लिखा और इनके बारे में सदन से कुछ बातचीत करी , ये खेल
1-घर-घर
2-गुड्डे-गुड़िया की शादी
3- डॉक्टर- डॉक्टर
4- टीचर-टीचर
इन खेलों और अन्य खेलों के फर्क को समझते हुए सदन से कुछ इस तरह की बातें सामने आयीं जो इन खेलों की विशेषताओं को बतातीं हैं,
1- इन खेलों के कोई नियम नहीं हैं |
2- इनमे समय की कोई सीमा नहीं है |
3- इन खेलों में बहुत नाटकीयता है |
4- इनमे परिवेश की वस्तुओं का भरपूर उपयोग किया जाता है|
5- इन खेलों में कोई हार जीत नहीं होती |
6- ये खेल भावनात्मक होते हैं |
7- सांस्कृतिक और सामाजिक पहलु का प्रदर्शन होता है |
8-इन खेलों में खेलने वाले किसी और के किरदार में होते हैं |

तीसरा दिन – 27 जून 2016 (सोमवार)

तीसरे दिन की शुरुआत पहले 2 दिनों के पुनरावलोकन के साथ हुई जहाँ कमलेश जोशी जी, नन्दी बहुगुणा जी, जुयाल जी, तेजोमही बधानी जी ने पिछले 2 दिनों में हुई गतिविधियों का संछिप्त विवरण दिया | जहाँ शिक्षक साथियों का कहना था की उन्होंने पिछले 2 दिनों में अपने बचपन को जिया है, साथ ही कई सवाल भी आये जिन पर सुगमकर्ता ने कहा कि जब शिक्षक साथियों के सवाल होंगें तो ही बच्चों को भी सवाल पूछने का मौका मिलेगा और कक्षा कक्ष में समता समानता और स्वायतता का माहौल भी बना रहेगा |
इसके बाद सदन को 2 लेख दिए गए
पहला "पार जेन हीव्स" का लिखा – खेल क्या है ? यह क्यूँ महत्वपूर्ण हैं ?
दूसरा "रुथ हार्टले" का लिखा – नाटकीय खेल
"खेल क्या है ? यह क्यूँ महत्वपूर्ण हैं ?"--- पार जेन हीव्स
पहले और तीसरे समूह ने पहले लेख को पढकर अपनी समझ सदन के सामने रखी जिसके मुख्य बिंदु कुछ इस तरह थे,
1-मनोरंजन के लिए खेली जाने वाली प्रक्रिया है |
2- खेल सभी को संतुष्टि प्रदान करते हैं |
3- शारीरिक और मानसिक विकास होता है |
4-बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत जरुरी हैं |
5- समय और मौसम के हिसाब से खेलों में बदलाव होते रहते हैं |
6- उम्र के लिहाज़ से नियमबद्ध खेलों की और रुझान होने लगता है |

7- खेल खेलने के दौरान विचार विमर्श का बहुत महत्त्व होता है |
8- खेल के विभिन्न रूप बचपन के अलग अलग चरणों में उभरते हैं |
9- बच्चों में हो रहे विकास और परिवर्तन उनके खेलों में भी नज़र आते हैं |
10- बचपन के खेलों के अनेक रूप होते हैं , मनोवैज्ञानिक तरीके से इनको खोजपरक खेल, संरचनात्मक खेल, शारीरिक खेल, नाटकीय खेल, प्रतीकात्मक खेल और नियम वाले खेलों में बाँटा जा सकता है |
"नाटकीय खेल" ----- रुथ हार्टले
वहीँ दुसरे और चौथे समूह ने "नाटकीय खेल" लेख पर अपनी समझ सदन में रखी जिसके मुख्य: बिंदु इस तरह से थे ,
1- नाटकीय खेल आत्म निर्देशित होते हैं |
2- इनकी मूल भावना एक रहती है |
3- खुद के व्यक्तित्व से हटकर चरित्र में डूब जाते हैं |
4- इन खेलों में परिवेश की परिस्थितियों का पुनर्निर्माण होता है |
5- इसमें बच्चे स्वयं की अवधारणा को दर्शाते हैं |
6- इनमे यथार्त से प्रेरित घटनाओं पर कल्पनाओं का अंश होता है |
7- इनमें सामाजिक और चिरपरिचित परिवेश का मंचन करते हैं |
8- रोमांच और अर्थपूर्ण भावों का निष्पादन होता है |
9- बच्चों में नयी रुचियों का निर्माण होता है और कक्षा कक्ष में उनका निष्पादन होता है |
10-नैसर्गिक क्षमताओं का विकास होता है |
सुगमकर्ता ने नाटकीय खेलों को ड्रामा इन एजुकेशन का आधार बताया साथ ही यह बात भी सामने आई की ये इस तरह के खेल हैं जो बहुत सारे कौशलों का विकास करते हैं जो सीखने में बच्चों के लिए बहुत मददगार साबित होते हैं | वहीँ कमलेश जोशी जी ने नाटकीय खेलों पर अपनी बात रखते हुए कहा कि उम्र के हिसाब से खेलों की समझ बनती है और अवधारणायें विकसित होती हैं जोकि सीखने में बच्चों की मदद करती है और इनसे इन्द्रियों का विकास होता है |

सत्र 5 : Storytelling (कहानी सुनाना)

अगले सत्र में सुगमकर्ता ने नाटक की विधा – कहानी पर बातचीत करी और शिक्षक साथियों से कोई कहानी सुनाने को कहा जो वो कक्षा कक्ष में सुनते हों| कुछ शिक्षक साथियों ने प्राथमिक स्तर की कहानियां सुनाई जिसमें "भूखा शेर और चालक खरगोश", "प्यासा कौवा", और "बुढ़िया और लोमड़ी की कहानी" थीं I
कहानी के मायने क्या ?
इस प्रश्न के उत्तर में सदन से यह निष्कर्ष निकल कर आया की कहानी हम उसको कहेंगे जिसमे निम्न तत्व होंगे

- **पात्र**
- **विषयवस्तु**
- **क्रमबद्धता/ तारतम्यता**
- **अनुभव**
- **मनोरंजन**
- **उत्सुकता/ रोचकता**
- **घटनाएं**
- **उददेश्य**

यहाँ पर सदन को एक बार फिर 4 समूहों में बाँटा गया जहाँ उनको किसी कहानी को नाटक के रूप में मंचन करना है और उस कहानी को चुनने की

वजह बतानी है | सभी समूहों ने अपनी अपनी कहानी का मंचन किया और उसमे से मुख्य रूप से जो कहानी चुनने की वजह सामने आई वो कुछ इस तरह से थी,

1-कहानी शिक्षाप्रद थी

2- कहानी मनोरंजक है

3- कहानी छोटी है

4- कहानी नैतिक मूल्यों का विकास करती है

5- कहानी परिवेश का ज्ञान देती है

कहानी की बातचीत को आगे बढ़ाते हुए सुगमकर्ता के सवाल कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों की दृष्टि से कहानी कैसी होने चाहिए? पर शिक्षक साथियों के जवाब

- छोटी और सरल
- रोचक, रहस्यमयी और कौतुहल से भरपूर
- सरल शब्दों में
- काल्पनिक
- कम पात्र हों

इसके बाद सदन में उपस्थित सभी सदस्यों ने एक-एक वाक्य कहकर एक कहानी का निर्माण किया | पहले सदस्य के वाक्य "एक गाँव में एक छोटी लड़की थी" से शुरू होकर ये कहानी बहुत से मोड़ लेते हुए आखरी सदस्य के वाक्य "और उसने देखा की ये सब उसका सपना था " पर जाकर ख़त्म हुई |

हम बच्चों को कहानी क्यूँ सुनाते हैं ?

तीसरे दिन के आखिरी सत्र में जब बात कहानी और उसको सुनाने को लेकर चली तो एक प्रश्न यह भी आया की आखिर हम कहानी सुनाते क्यूँ हैं ? इसका क्या महत्त्व है वो भी प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ | कमलेश जोशी जी ने कहा की संवाद स्थापित करने के लिए कहानियो का इस्तमाल करना बहुत ही लाभकारी है , कहानियां बच्चों और शिक्षक के के बीच की दूरी को पाटने का काम करती हैं | कक्षा में प्रवेश करने के साथ ही बच्चों को कहानी के द्वारा अपने साथ जोड़ा जा सकता है, कहानियां बच्चों का ध्यान इसलिए खींचतीं हैं क्यूंकि बच्चे खुदको कहानी में देख सकते हैं, और इसके बाद कहानी की घटनाएँ अपना आकर्षण बनायें रखती हैं |

शिक्षक साथी सुनील मैखुरी जी ने बताया कि नैतिक शिक्षा भी एक बड़ा कारण है कहानियां सुनाने का जिससे बच्चे के अन्दर नैतिक गुण विकसित होते हैं | सुनील जी की इस बात से सदन में लेकिन एक मत नहीं था, शिक्षक साथियों का कहना था कि कहानी मनोरंजन का एक माध्यम मात्र है जिसका नैतिकता से सीधा कोई सम्बंध नहीं है | कहानी को नैतिक शिक्षा से जोड़कर हम कहानी को संकुचित कर देते हैं और उसके दुसरे आयामों को ऐसे ही छोड़ देते हैं |

सुगमकर्ता ने कहानी की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि कहानियाँ अनुभवों को कल्पनों में बदलने का एक बहुत अच्छा माध्यम है |साथ ही उन्होंने कहानी के तीन पक्षों की बात की जिसमे कहानी की शुरुआत, कहानी का अंत और कहानी का वो हिस्सा जो कहानी को एक नया मोड़ देता है और जिसे हम द्वन्द, Turning Point, Twist, Tension Point, या Conflict भी कहते हैं |

Stop, Freeze और Move-

सत्र के अंत में एक गतिविधि की गयी जिसमे सभी साथियों को खुले में चलते हुए अपनी गति को बढ़ाते रहना है और जब Stop कहा जाए अपनी जगह पर रुक जाना है और जब freeze कहा जाए तो सबको अपनी जगह पर उसी स्थिति में खड़े हो जाना है जैसे वो हैं I धीरे धीरे जब ये गतिविधि आगे बड़ी तो freeze पर साथियों को एक नयी मुद्रा में खड़े होना है और हर बार नयी नयी मुद्रा बनानी है | कुछ इसी तरह अब 2,3 और 4 के समूहों में नयी नयी मुद्रा बनानी है जिसमे आप कुछ करते हुए नज़र आयें | और जब आपके समूह को प्ले (PLAY) कहा जाए तो आप जो काम कर रहे थे वो करना शुरू करना है| आप जो भी किरदार बने हैं उसको जीवंत रूप में प्रस्तुत करना है |

चौथा और आखिरी दिन 28 जून 2016(मंगलवार)

कार्यशाला के आखिरी दिन की शुरुआत भी गतिविधि के साथ हुई जिसके बाद कृष्ण कुमार के लेख "कहानी सुनाने का हुनर" पर सदन में बातचीत हुई, जिसके अनुसार हर शिक्षक के पास कहनियों का एक भण्डार होना चाहिए खासकर पारंपरिक कहानियों का जिसे वो बड़े ही आत्मविश्वास और इत्मीनान से बच्चों को सुना सके I इस तरह की कहानियाँ प्राथमिक स्तर के पहले दो दर्जों का माहौल बदल कर रख सकती हैं |

कहानियां अच्छी तरह सुनने की क्षमता का विकास करती हैं, सुनना अब एक कौशल मात्र नहीं रह गया है बल्कि एक रवैया माना जाने लगा है जिसे प्रोत्साहित करने के लिए बड़े स्तर के प्रबंधन और प्रशासन के कोर्स आज उपलब्ध हैं | साथ ही कहानी सुनाने से अंदाज़ लगाने का प्रशिक्षण भी मिलता है, स्वाभाविक है की ये प्रशिक्षण अनजाने में होता है मगर बच्चों को इस बात की ख़ुशी होती है कि कहने को दूसरी या तीसरी बार सुनते हुए वे सफलतापूर्वक अंदाज़ा लगा सकते हैं की आगे क्या होने वाला है | कहानियां हमारी दुनिया को इस अर्थ में फैलाती हैं कि हम उनके जरिये ऐसे लोगों या स्थितियों को जान लेते हैं जिनसे हमारा वास्ता अपनी जिंदगी में कभी नहीं पड़ा | और ये स्थितियां और लोग जीवन का अंग हैं , कहानियां सुनाने से छोटा बच्चा जो अभी साक्षर भी नहीं है, अपनी वास्तविक दुनिया से कहीं बड़ी दुनिया की कल्पना करता है और उसका अनुभव कर पाता है |

कहानी सुनाने के कौशल को लेकर ये लेख कहता है कि कहिनी को लेकर बच्चों के साथ संवाद कई तरह विकल्प पेश करता है | आप चाहें तो नाटकीय ढंग से दो आवाजों में बोले, इशारों या मुद्राओं से भी काम ले सकते हैं | संवाद को सजीव बनाने के लिए आप हाथ की कठपुतलियों का प्रयोग भी कर सकते हैं, आप कक्षा के एक कोने से दुसरे कोने तक चलकर अलग अलग किरदारों की भूमिका भी निभा सकते हैं | ये सभी संभावनाएं रोचक हैं और वे हमें इस बात की चुनौती देती हैं कि हम एक कहानी को साल दर साल या एक साल में कई बार सुनाते हुए अपनी सामर्थ्य बढ़ाते चलें |

शिक्षक साथी कमलेश जोशी जी ने कहानी के हुनर की बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि कहानी एक हथियार और एक ताकत की तरह है जो बच्चों तक सन्देश पहुँचाने का काम करती हैं | प्रेमचंद की कहानिया आज भी अपनी विषयवस्तु और कथानक की वजह से पाठक के मन में चरित्र और परिस्थितियों के लिए जुड़ाव पैदा करती हैं |

सत्र 5: Frozen Picture -

फ्रोज़ेन पिक्चर एक ऐसा स्थिर दृश्य (still image) है जहाँ किसी नाटक को मंचित करते हुए उस नाटक के द्वन्द, Turning Point को देख सकते हैं , और उस दृश्य में रुक कर कलाकारों से संवाद स्थापित किया जा सकता है ताकि उस दृश्य के द्वन्द को समझा जा सके या कलाकार के मन की बात को जाना जा सकता है |

सुगमकर्ता ने सदन को 4 समूहों में बाँट कर उनसे किसी बचपन की कहने पर नाटक के पहले, आखिरी और कहानी के द्वंद, Turning Point को Frozen picture में दर्शाने को कहा | जिस दृश्य को देख कर सदन को ये बताना था कि ये कौन सी कहानी है और इसमें क्या CONFLICT हो सकता है |

समूह 1- प्रेमचंद की कहानी ईदगाह

समूह 2- कछुए और खरगोश की कहानी

समूह 3- टोपीवाला और नकलची बन्दर

समूह 4- कबूतरों का झुण्ड और बहेलिया की कहानी

इन कहानियों का मंचन करते हुए सभी साथियों ने बड़ी गंभीरता से अपने अपने किरदारों को निभाया और कहानी के द्वंद को दर्शाने की भरपूर कोशिश करी I साथ ही कहानी को अभिनीत करके भी दिखाया जिसके बाद सभी जान सके कि कौन सी कहानी है और कहानी में क्या द्वंद है !

Stop, Freeze और PLAY :- एक बार फिर से ये गतिविधि हुई जहाँ सभी साथियों को खुले में चलते हुए अपनी गति को बढ़ाते रहना है और जब Stop कहा जाए अपनी जगह पर रुक जाना है और जब freeze कहा जाए तो सबको अपनी जगह पर उसी स्थिति में खड़े हो जाना है जैसे वो हैं I अब २,३ और ४ के समूहों में नयी नयी मुद्रा बनानी है जिसमे आप कुछ करते हुए नज़र आयें और जब आपके समूह को प्ले (PLAY) कहा जाए तो आप जो काम कर रहे थे वो करना शुरू करना है साथ ही साथ उस स्थिति में हुए संवाद को भी अभिनीत करके दिखाना है I

सत्र 6 : Improvisation (इम्प्रोवाइजेशन) –

सजीव नाटक विधा में एक ऐसी स्थिति जहाँ पर आपको नाटक की विषयवस्तु, किरदार और संवाद उसी वक़्त बनाने हैं जब आपको कहा जाए | पहले से कोई स्थिति या विषय निर्धारित नहीं होता, साथी कलाकारों को भी उसी तरह से प्रतिक्रिया करनी होती है |

सुगमकर्ता ने एक बार फिर सभी समूहों से एक ऐसे दृश्य को दर्शाने को कहा जो किसी भी सदस्य की जिंदगी का ऐसा पल रहा हो जहाँ वो सबसे ज्यादा असमंजस की स्थिति में रहे हों और उस द्रश्य में वो द्वंद वो असमंजस की स्थिति दिखनी चाहिए |

सभी समूहों ने कुछ देर की बातचीत के बाद किसी एक सदस्य के जीवन की सच्ची घटना पर वो दृश्य सदन के सामने दिखाया | जहाँ पहले समूह ने अपने दृश्य में दिखाया कि कुछ लोग बैठे हैं और एक खड़े आदमी की और हाथ से बुलाते हुए इशारा कर रहे हैं वहीँ एक महिला भी दूसरी तरफ से उस आदमी की तरफ इशारा कर रही है और वो आदमी बीच में दोनों ओर अपने हाथ को बढ़ाते हुए दिख रहा है |

इस दृश्य पर सदन से बातचीत करी गयी जहाँ कुछ लोगों का कहना था की बैठे हुए लोग उस आदमी के परिवार के सदस्य हैं और दूसरी और वो महिला उसकी प्रेमिका है जो उसका साथ चाहती है | इसी तरह के कई कयास सदन ने लगाये जिससे अलग अलग कहानियां बनती नज़र आयीं | फिर जब PLAY कहा गया तो नाटक को जीवन्त करके एक दृश्य अभिनीत किया गया उसे फिर रोककर अब सदन से पूछा गया कि अब क्या लगता है कि क्या हो रहा है इस कहानी में ? धीरे धीरे करके कहानी की परते खुलती गयी और उसके बाद सदन और पात्रों के बीच में संवाद हुए जहाँ सदन से कई तरह के प्रश्न आये जिनका जवाब उस पात्र को निभा रहे साथी ने दिया जबकि असल जीवन में वो कहानी किसी और साथी की थी | लेकिन किरदार में होकर उन सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गए और इसी तरह सभी समूहों ने अपने अपने नाटकों का मंचन किया जहाँ पर उनको द्वंद या असमंजस का दृश्य दिखाना था और उस पर प्रश्न उत्तर किये गए |

सत्र 8:कार्यशाला का फीडबैक-

कार्यशाला के आखिर में कुछ शिक्षक साथियों ने पिछले 4 दिनों के अनुभवों को बताते हुए कहा की किस तरह से वो ड्रामा को शिक्षा में शामिल करने का प्रयास करेंगे , और बच्चों के बीच इसको माध्यम के तौर पर अपनाएंगे |

शिक्षक साथी जुयाल जी ने कहा कि हमको इस कार्यशाला में अपनी परतें खोलने में 3-4 दिन का समय लग गया क्यूंकि हम सभी व्यस्क हैं फिर भी ये इतना आसान नहीं था कई बार हम पूर्वाग्रहों से ग्रसित होते हैं , और बच्चों के साथ तो यह और भी मुश्किल काम है क्यूंकि उनके और आपके बीच उम्र का एक लम्बा फासला है | बच्चों को सम्मान की जरुरत है तभी हमसे घुलमिल पायेंगे , जब हम उनको अपने बराबर में देख सकेंगे | नरेंदर नगर की शिक्षिका श्रीमती नंदी बहुगुणा ने ए.पी.एफ़. का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस चार दिन की कार्यशाला में जो कुछ भी सीखा जो कुछ भी हम लेकर जा रहे हैं उसे बच्चों तक पहुँचाना है जिससे सीखने के प्रक्रिया को गति मिल सके | गर्मियों की छुट्टियां व्यर्थ नहीं गयी बल्कि कार्यशाला में आकर मूल्यवान हो गयीं हैं | शिक्षक साथी सुनील मैखुरी जी ने कहा कि ड्रामा का इस्तमाल कक्षा कक्ष में करके बच्चो को बहुत कुछ सीखाया जा सकता है , ड्रामा वास्तविकता की और लेके जाने वाला माध्यम है | कार्यशाला में आये शिक्षक साथियों से बहुत कुछ सीखने और जानने को मिला | शांति उनियाल जी ने कहा कि पहले दिन पहले सत्र में तो लगा कि शायद छुट्टियाँ बेकार हो गयी लेकिन आज 4 दिन के बाद लग रहा है की बहुत कुछ सीखने को मिला और ये सब कुछ कक्षा में बहुत काम आएगा जहाँ बच्चे हमसे बहुत कुछ उम्मीद लगा के रखते हैं | चमोली के शिक्षक साथी विरेंदर बहुगुणा जी ने कहा कि हमको लगता था की हमे सब कुछ आता है और आता भी है मगर उसको कक्षा में कैसे बरतना है वो शायद नहीं पता था, इस कार्यशाला में वो सब कुछ सीखने जानने को मिला | उन्होंने कहा कि हम सभी को यहीं तक सीमित नहीं रहना है बल्कि निर्माण, निर्वाण और निर्वाह को कक्षा तक भी लेकर जाना है |
ए.पी.एफ़. के राज्य प्रमुख कैलाश काण्डपाल जी ने सभी शिक्षक साथियों का इस कार्यशाला में शामिल होने पर धन्यवाद किया और बताया की कैसे पिछले एक महीने में 600 से ज्यादा शिक्षक साथियों ने अपनी गर्मियों की छुट्टियों में इसी तरह की कार्यशालाओं में भागीदारी करी है जोकि एक सराहनीय पहल है I समावेशी शिक्षण की बात करते हुए उन्होंने कहा की ड्रामा तो जिंदगी का एक अहम् हिस्सा है, हर इंसान के अन्दर अलग अलग किरदार होते हैं विद्यालय में वो शिक्षक के किरदार में होता है और घर में किसी और किरदार में ,ड्रामा का इस्तेमाल माध्यम के रूप में होना शिक्षण को और ज्यादा बेहतर करेगा | आने वाले समय में ड्रामा की और कार्यशालाओं का आयोजन करने का प्रयास किया जाएगा जहाँ हम ड्रामा के और पहलुओं से कुछ सीख रहे होंगे | इसके बाद अम्बरीश बिष्ट जी ने सभी प्रतिभागियों को कार्यशाला में प्रतिभाग करने के लिए धन्यवाद दिया व कार्यशाला का समापन हुआ |

प्रतिभागियों की सूची :

क्रम	प्रतिभागी का नाम	विद्यालय	संकुल	ब्लाक	जिला
1	Yashpal Rana	G.P.S. Sukkhi	Harsil	Bhatwari	Uttarkashi
2	KANHAIYA Semwal	G.P.S. KAMAD	KAMAD	DUNDA	Uttarkashi
3	Virendra Bisht	G.P.S. Paw Singot	Nakuri	Dunda	Uttarkashi
4	Jai Prakash Nautiyal	G.P.S. Kolla	Gadoli	Naugaon	Uttarkashi
5	Data Ram Nautiyal	G.P.S. Palakurali	Gortil	Jakholi	Rudraprayag
6	Tejomani Badoni	G.H.S. Onri T.G.	Birogi	Chamba	T.G.
7	Kanti Uniyal	G.P.S Thangdhar	Satyedevi Bober	Chamba	T.G.
8	Meenakshi Uniyal	G.P.S Bhawan	Syali	Jaunpur	T.G
9	Surbhi Rawat	G.P.S. TIMLI	Magtha	Yamkeshwar	Pauri
10	Nandi Bhushan	P.S. Rampur	Aamapata	N.N.	Tehri Garhwal
11	UMA DYUNDI	Cod. C.R.C	Aamapata	N.N	T.G.
12	Shanti Uniyal	G.P.S Kathbangla	[illegible]	Nagarchhetra	D.Dun
13	Kanjana Butola	G.P.S Gangnani	[illegible]	Bhatwari	Uttarkashi
14	Mrs. Suman Joshi	G.P.S Jhala	Harsil	Bhatwari	Uttarkashi
15	Mrs. Mamta Petwal	G.P.S Athali	Salad	Bhatwari	Uttarkashi
16	Sailendra BL	G.P.S. Kotalla	Nagrasu	Augusts	Rudraprayag
17	Devendra Uniyal	J.H.S Khandukhal	Khandukhal	Kot	Pauri
18	Manvir Singh	G.H.S.S. Chaampa	Ampata	Nar. Nagar	Tehri
19	Kamlesh Joshi	G.H.S.S. CHARDHAR	CHARDHAR	PAURI	PAURI

क्रम	प्रतिभागी का नाम	विद्यालय	संकुल	ब्लाक	जिला
20	ओमप्रकाश अमोला	रा. उ. मा. वि. कोटलगांव	थौलधार	जौनपुर	टिहरी
21	Vijay Singh	P.S. Devprayag	Devprayag	Devprayag	T.G
22	V.P. Kathiyal	G.U.P.S. Lambdhar	Timli	N.Nagar	T.G.
23	Vijendra Rawat	G.P.S. Kot	Mangaon	N.Nagar	T.G.
24	Sunil Maikhuri	G.P.S. Jemdunga	Chamoli	Dashali	Chamoli
25	Meenakshi Singh	M.G.P.S. Ajabpur	Ajabpur	Raipur	Dehradun
26	Narendra Kumar Bahuguna	G.I.C. Bairangna	Bairangna	Dasholi	Chamoli
27	S.N. Juyal	GMPS Lwali Pauri	Lwali	Pauri	Pauri Garhwal
28	Manjali Arya	G.P.S Vimalwali Pani	Nandgaon	Jakhanidhar	Tehri
29	REKHA AGARWAL	G.P.S Chowki Chung	Nagal Hatnala	Raipur	Dehradun
30	Anju Manoduli	R.P.V Bandh V. Banjarawala	Banjarawala	Raipur	DehraDun
31	Vinesh Kanojia	P.S. Deepnagar	Ajabpur	Raipur	Dehradun